'Research Journey' International Multidisciplinary E- Research Journal
Vol. 2 Issue. 2
ISSN :2348-7143 (Online)
April- June- 2015

vukfedk dk dkO; & oipkfjd ifjis{;

Mk- j[kk xktj
v/;{k LukrdkRrj fgUnh foHkkx]
dyk] foKku ,o i] vk] ukgkVk okf.kT; egkfo|ky;]
Hkqlkoy ft- tyxko] Hkkjr

अनामिका मानव जीवन को बृहत्तर परिप्रेक्ष्य में देखती है। उनकी कविताएँ उनके प्रगतिशील विचारों की परिचायक है। नारी मन की पीड़ा उनकी कविता के केंद्र में है। अनामिका की कविताएँ सिद्ध करती है कि वे समकालीन हिंदी कविता की एक प्रमुख हस्ताक्षर है।

समसामयिक युग की कविता में भावना के स्थान पर विचारतत्व की प्रधानता परिलक्षित होने लगी है और आदर्श से यथार्थ महत्वपूर्ण होने लगा है। कथ्य से आशय महत्वपूर्ण माना जाने लगा। आज के वैज्ञानिक युग में विचारतत्व का काव्य में समावेश अवश्यंभावी माना जा रहा है। छायावाद के साथ कल्पना एवं भावतत्व गौण होते चले गये और बुद्धितत्व प्रधान होता चला गया। अनामिका एक चिंतक है उन्होंने चिंतन प्रधान निबंध लिखे हैं। यही चिंतन उनके काव्य का केंद्र बिंदु बना है। उनके काव्य की प्रत्येक पंक्ति में वैचारिकता फूट फूटकर भरी है। दूसरे शब्दों में वैचारिकता अनामिका के काव्य का प्रमुख स्वर स्वीकार किया जा सकता है। विवेकशीलता और संवेदनशीलता के कलात्मक संयोजन के कारण उनकी कविताएँ कालजयी बनी हैं। उनके काव्य में अनुभूति की प्रामाणिकता और वैचारिकता परिलक्षित होती है। मनुष्य के जीवन में सुख–दुख का क्रम अबाधित रूप से समाहित है। उनके शब्दों में – **'सुख छोटे – छोटे/नन्हें – नन्हें दुख/एक दूसरे के पीछे/एक बड़े परिधि में/चक्कर काटते हैं बेतहाशा।'**[1] जीवन का वस्त्र सुख–दुख के ताने–बाने से बुना होता है। कवि नीरज ने लिखा था – 'मेरा कुर्ता सिला दुखों ने। बदनामी के काज निकाले। अनामिका भी लिखती है कि –**'सलाईयों पर सुख–दुख की बूना हुआ है ऊनी जीवन।'**[2]

मनुष्य शक्तिशाली प्राणी है। अन्य प्राणियों से वह इसलिए भिन्न है कि उसके पास मानसिक शक्ति अधिक होती है। उसमें अपार ऊर्जा होती है जो उसे सीमाओं में बद्ध होने की संकुचितता प्रदान नहीं करती। जो कुछ है उससे अधिक पाने की इच्छा और उसके लिए प्रयत्न मानव जीवन की विशेषता है। कवयित्री 'अभिलाषा' नामक कविता में यह विचार व्यक्त करती है कि – **'सामार्थ्य की सीमाएँ नहीं होती/नहीं बंधी होती इन सीमाओं में/कुछ कर पाने की ललक ।**[3]

मनुष्य के जीवन के तीन आयाम महत्वपूर्ण माने जाते हैं – जन्म, जीवन और मृत्यु । इसमें जन्म के साथ मृत्यु का सत्य निहित होता है जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु अवश्यंभावी है। मृत्यु के इस सनातन सत्य की ओर संकेत करते हुए कवयित्री ने लिखा है – **'उस दिन अचानक ही जिंदगी के दरवाजे/मौत का प्रतीक्षित वह डाकिया/दे गया हलकी – सी दस्तक।**[4]

नया वर्ष यह अहसास कराता है कि मनुष्य के अनेक दायित्व शेष रह गये हैं, उसके सपनों का संसार अपूर्ण ही रहा है। मनुष्य की अनेक इच्छाएँ अनब्याही रह जाती है और समय गुजरता जाता है। समय किसी के लिए रूकता नहीं है। वर्ष के बाद वर्ष नदी के प्रवाह के समान बहते चले जाते हैं। अनामिका ने 'नया वर्ष' कविता में यह व्यथा व्यक्त की है –**'नया वर्ष ! अखबार कह गया – नया वर्ष/दायित्व पुराने कॅलेंडर से टंगे रहे/कि उन्हीं पुराने सपनों का संसार कह गया नया वर्ष।**[5]

इसी कविता में वे कहती है कि नया वर्ष एक औपचारिकता लेकर आता है। सब कुछ पहले जैसा ही रहता है। उन्हीं के शब्दों में – **'नया वर्ष क्या होता है,/उत्साह हर्ष क्या होता है –/डायरिया बइदलती है लेकिन, मजनून वही तो रहते है।**[6]

अनामिका के लिए कोई एक विषय निश्चित नहीं है क्योंकि वह किसी विचारधारा से बद्ध कवयित्री नहीं है। व्यष्टि, समष्टि और राष्ट्र के असंख्य विषय उनकी कविताओं में दृष्टिगत होते हैं। राष्ट्र के प्रति समर्पित अनामिका 'देश : दो' कविता में लिखती है कि राष्ट्रगीत एक ऊर्जा है जो यह संदेश देता है कि राष्ट्रगीत मनुष्य को झंडे के समान ऊँचाई पर फहराने के लिए प्रेरित करता है। राष्ट्रगीत केवल गीत नहीं है उसमें राष्ट्रीयता मानव जीवन को संदेश प्रदान करने की शक्ति है। मनुष्य को प्रेरित करने की ऊर्जा है – **'जी हुजुर राष्ट्रीय गीत है .../बड़ों – बड़ों को फॉरवर्ड मार्च करा जाता है,/कितनी ही मैली, मौलाई – सी प्रतिभा हो –/फौरन धुलवाकर टार्च कराया जाता है/जो राष्ट्रगीत नहीं गाएगा –/झंडे – सा कैसे लहराएगा ?'**[7]

मनुष्य का मन स्मृतियों पर चलता है। अनेक धनीभूत प्रसंग स्मृति बनकर उसके मन में उथल–पुथल मचाते रहते हैं। मनुष्य अतीत की घटनाओं को स्मरण कर यादों की जुगाली करता रहता है। यादें अचानक उभरती है और उसे हॅसाती–रूलाती हैं। 'यादें' नामक कविता में कवयित्री ने यह विचार व्यक्त किया है कि यादें जीवन की आपाधापी में आती रहती है और बिन मौसम बदली – सी छा जाती हैं। वे मानती है कि – **'यादें है नवनीत अगर तो, बाकी छाछ अतीत अगर तो/जब भी मथना होगा मन, तभी धीरे उठ आती होंगी!/**[8]

'इंतजार' नामक ग़ज़ल में अनामिका ने मनुष्य की विशेषताओं को रेखांकित किया है। वह एक साथ कितने ही मोर्चे संभालता है। इच्छाओं से युद्ध रत रहता है। दुनिया के यथार्थ से साक्षात्कार करता है। उसके मन में उलझने हैं। कभी वह इस दुनिया से प्यार करता है कभी इससे डरता है। फिर भी आगे बढ़ता जाता है –**'इंतजार करता है आदमी, जां निसार करता है आदमी,/कितने ही मोर्चे संभाल कर एक प्यार करता है आदमी!/इच्छाओं से होता है युद्ध कभी,/होती है दुनिया ही वृद्ध कभी/अपना मन भी उलझा करता है,/पर किससे डरता है आदमी।'**[9]

गौतम बुद्ध से लेकर अनामिका तक कई विद्वानों ने दुःख के सत्य को स्वीकार किया है। मौत और मौत का आतंक, भूख – प्यास, आर्थिक अभाव, दुखों के कारण हो सकते हैं। मनुष्य का संपूर्ण जीवन दुखमय है उसके जीवन का इतिहास अश्रूमयी घटनाओं से लिखा रहता है। अनामिका के अनुसार – **'दुःख बड़ा क्या है ?/प्रिय का उस पार चला जाना ?/बेटे का पास नहीं आना ?/बेटी की टूटी गुहस्थी ?/दुश्मन की वह धींगा मस्ती ?/सहमा हुआ छोटा बच्चा ?/दंगे, कलह, मारपीह ?/परदेस में घर की यादें ? रिश्तों की हिलती बुनियादें ?'**[10]

सामान्य से सामान्य विषय अनामिका की वैचारिकता के कारण असामान्य हो जाते हैं। सेफ्टीपिन जैसी छोटी– सी वस्तु कितने महत्व की हो सकती है इसे अनामिका ने स्पष्ट किया है। इसका उपयोग आम आदमी भी करता है और धनवान भी लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि कोई भी इसमें निहित यांत्रिक शक्ति को पहचानने का प्रयास नहीं करता है। अनामिका इसको एक पुलिया' के रूप में वर्णित करती है। इसके लिए एक उदाहरण देती है सात बजकर पॉच मिनिट पर बच्चें की बस आती है और अंत समय में दिखा कि उसके पॅट की बकल टूट गई है तभी सेफ्टीपिन हाजिर हो जाती है –**'जहॉ कही कुछ टूटा, जहॉ कहीं कुछ छूटा –/स्टील की एक छोटी – सी पुलिया – सा/ तन जाता था बीचों बीच कही बेचारा।/ अच्छे स्वभाव की सब खूबी खामियों के साथ। '**[11]

इसी प्रकार 'रद्दी की टोकरी' में वे यह विचार व्यक्त करती है कि कागज पर अंकित अक्षर स्नेह, प्यार और विश्वास के प्रतीक बनकर उभरते हैं। परंतु यदि उस कागज को रद्दी की टोकरी में डाल दिया जाए तो उसका महत्व उपयोग हीन वस्तु की तरह होता है। इसी तरह जिन वस्तुओं को आम आदमी महत्व नहीं देता उनको अनामिका अपने काव्य में स्थान देती है जैसे – फर्निचर, दरवाजा, असबाब, दॉत, जूतें, ढोल, पटली, चुटपुटिया बात आदि। 'जूते' नामक कविता में वह यह वैचारिक व्यथा व्यक्त करती है कि मनुष्य जिस नकारात्मक भाव से जूते की ओर देखता है उसी भाव से वृद्धों के साथ व्यवहार करता है। अनामिका को पर्यावरण की चिंता है। पॉलीथिन के आम उपयोग पर वे चिंता व्यक्त करती है। यथा – **'अक्षय होते है पॉलीथिन/कहते पर्यावरण वाले/माटी में मिलते नहीं, गाय के गले में अटकते हैं/कर देते है नाली जाम – तौबा, इनसे !'**[12]

यह एक यथार्थ है कि मनुष्य की उपयोगी इंद्रियां वृद्धावस्था के साथ उसका साथ छोड देती हैं और अंततः वह मृत्यु प्राप्त करता है। अनामिका ने 'इंद्रिया' नामक कविता में यह विचार प्रस्तुत किय है कि मनुष्य अपनी पॉचों इंद्रियों को लेकर अपना दफ्तर शुरू करता है। परंतु एक एक अपना काम छोड़कर चले जाते हैं। वह अनुभव करता है कि उसे त्वचा का त्यागपत्र मिलता है। अब कितनी भी मार पर स्पर्श का कंपन नहीं होता। इसी प्रकार पहले ऑखें उचटी, फिर जीभ पलट गई।... फिर होठों की नाव उतर गई। तत्पश्चात कान बहुत दिन नक झनझनाएँ। जब तक सासों का अनहद न चलता रहा।

कवि की विशेषता होती है कि वह छोटी से छोटी वस्तुओं, बातों में उपादेयता देखता है। हाशिए के महत्व को रेखांकित करते हुए वे लिखती है – **हाशिया ही सबसे बड़ा है बरामदा/पन्ने का/जिन शब्दों की छूट जाती है गाडी/वे अपना झोला समेट कर/जरा ऊँघ लेने की जगह यही पाते हैं/ प्लॅटफॉर्म है हाशिया/थोड़ा –सा हाशिया/कपड़ों में छोड़ता है दर्जी–/उम्मीद में कि/कुछ तो बड़े होंगे बच्चे कपड़ों के फटने से पहले।'**[13]

हॅसी एक मनोभाव है। इस मनोभाव पर भी उन्होंने कविता लिखी है। हॅसी के स्वभाव का चित्रण करते हुए वे लिखती हैं – '**हॅसी बेधकड चीज है/यह आ सकती है कभी भी, कही भी/कठिन से कठिन वक्त में –/रात बेरात, बात–बेबात। तानाशाहों के दरबारों में/राजा नंगा, राजा नंगा, कहती कहत/यह पीट देती है ताली।**[14]

पारिवारिक रिश्ते की उदात्तता अनामिका ने अपनी कविताओं में व्यक्त की है। 'मौसियॉं' नामक कविता में वे इस रिश्तें की उदात्तता निरूपित करते हुए कहती है कि 'ये बारिश की धूप की तरह आती है – थोड़े समय के लिए और अचानक।' इस कविता के माध्यम से वे यह सिद्ध करना चाहती है कि पारिवारिक हास परिहास और अलगाव के बीच दुख से निजात पाने की बरकस कोशिशे और संयुक्त परिवार की विशेषता भी। अनामिका को दुख है कि –' **बीसवीं शती की कुड़ागाड़ी,/लेती गई खेत से कोढ़कर अपने/जीवन की कुछ जरूरी चीजें –/जैसे मौसीपन, बुआपन,/ चाची पंथी और अम्मगिरि मग्न/ सारे भूवन की।'**[15]

इस प्रकार संयुक्त परिवार की टूटन लेखिका को व्यथित करती है।

अनामिका की कविता 'सूली ऊपर सेज पिया की' की वैचारिकता को रेखांकित करते हुए मदन कश्यप ने लिखा है कि इस कविता में "पुरूष सत्ता के आतंक और दहशत में धिरी एक पढ़ी–लिखी संवेदनशील स्त्री के अंतर्द्वन्द्व को गहराई से उभारा गया है। यह ऊपर से भले ही बहुत सामान्य लगती है लेकिन अपने भीतर एक ऐसे भयावह यथार्थ को समेटे हुए है, जिसमें मरने और जीने के असबाब साथ–साथ उपस्थित है "[16] नारी के अंतर्द्वन्द्व की मार्मिकता द्रष्टव्य है –' **'टू बी आर नॉट टू बी '– शेक्सपीयर याद रहे हैं।/अनुष्ठान है पूरा –/साडी का फंदा बनाकर लटक जाना फंखे से।'**[17]

अनामिका की 'भरोसा' नामक कविता को दृष्टि केंद्र में रखकर अजय तिवारी लिखते है कि – "संवेदना के स्तर पर जो बात अनामिका को दूसरी कवयित्रियों से जोड़ती है, वह उनका 'तोस' नहीं बल्कि भरोसा है। यहॉं वे आत्मबद्धता की सीमाओं से बाहर निकलती है। यह भरोसा उन्हें अपने मध्यवर्गीय से नहीं मिलता रिक्षा चालक, श्रमिक से मिलता है। लौटने का वादा करके बिना पैसे दिये काव्य–वाचिका चली गई, दूसरे कामों में भूल गई, जाने कब लौटी, पर वह इंतजार करता रहा, बिना यह सोचे कि सवारी कही धोखा

न दे गई हो।"[18] इस कविता में निहित सत्य यह है कि –' **होता है पर इतना दुर्लभ नहीं होता –/आदमी का आदमी पर भरोसा !।/**[19]

अनामिका की वैचारिकता स्त्री को केंद्र में रखकर व्यक्त होती है जब वे लिखती हैं – "आज तो ज्यादातर घरों में स्त्रियॉ नव स्वातंत्र्य के उल्लास में तिहरे दायित्व निभा रही है। वे नौकरी करती है, गृहस्थी चलाती है, और बच्चों को पढ़ा–लिखाकर बड़ा भी वो करती है। ... जिन घरों में स्त्रियॉ नौकरी करती है – बिजली, पानी, टेलिफोन का बिल जमा करवाना, बॅन्क, पोस्ट ऑफिस, एल आय सी के सारे काम बच्चों के स्कूल आना–जाना, उनकी फीस भरना, आये गये को देखना भालना, सौदा सुलुभ करना ज्यादातर उन्हों के जिम्में रहता हैं और उसके समर्थन में एक सिधा तर्क दिया जाता है कि अधिकारों के साथ कर्तव्य क्यों न बढ़े भला ?"[20]

मनुष्य का जीवन दिन प्रतिदिन औपचारिक होता जा रहा है। वह किसी से मिलते समय औपचारिकता का परिचय देता है। बाहर से कुछ अंदर से कुछ मनुष्य की प्रवृत्ति बन गई है। इसे रेखांकित करते हुए कवयित्री लिखती है कि जिनको मनुष्य प्यार नहीं करा, उनसे किसी अच्छे बच्चे की तरह मिलता है। नमस्कार', माफ कीजिए', 'ओहो' 'धन्यवाद', 'कितना अच्छा है यह ' , 'कितना भला' जैस शब्द भाषा के गाव तकिए हैं। अत्यंत मुलायम।

कार्य–कारण भाव की वैचारिकता को वैज्ञानिक कारण' शीर्षक कविता में व्यक्त किया गया है। दार्शनिक शब्दावली को अनामिका अत्यंत सहज और स्वाभाविक शब्दावली में व्यक्त करती है। उदात्त विचार सामान्य शब्दों में व्यक्त होकर सहज बोध प्रदान करते हैं जैसे – **'दो जुड़वा भाई थे/कार्य और कारण !/ घर से तो निकले थे साथ मगर/मेले में बिछड़ गये/दोनों के चेहरे एक दूसरे से नहीं मिलते थे/जीवन भर दोनों ऐ दूसरे से अलग ही भटकते रहे।'**[21]

अनामिका की कविता के केंद्र में स्त्री संवेदना व्यापक रूप में लक्षित होती है। इस संवेदना में गहरी वैचारिकता निहित है– **मरने की फुरसत भी/कहा मिली सीमा को।** किसी स्त्री को पूछो तो उसका यही जवाब होगा कि मुझे तो मरने की फुरसत नहीं है। जो अपने सुख के लिए नहीं बल्कि दूसरों के दुख की मुक्ति के लिए अपने जीवन को समर्पित करती रहती है। वे मानती है कि स्त्री टूटती नहीं , तोड़ी जाती है – कभी समाज के द्वारा, कभी खुद के द्वारा। इस एहसास को वे इन शब्दों में व्यक्त करती है – **'मैंने तोड़ा खुद को/कूट–कूटकर/धूल – धूल कंकडी – कंकडी हुई/उडी तो कभी ऑखों में फिर –फिर –सी/गिरी, धॅसी तो नींव में जा पड़ी।'**

वर्तमान युग में जाति, धर्म को लेकर संघर्ष हो रहा है। धर्म के नाम पर दंगे फसाद हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में अनामिका ने एक बच्चे के माध्यम से यह विचार प्रस्तुत किया है कि– **'मुसलमान क्या होते है,**

अम्मा ?/वहीं पंच परमेश्वर' के जुम्मन मियॉं, उनकी खाला, हकीम अंकल और उनकी सेवइयॉं/'नीम के पेड़' सीरियल के वे/मीठी–खट्टी चरपरी भाषा बोलने वाले/बाअदब, शाइस्ता लोग ?"[22]

अनामिका की कविताऍं इसलिए वैचारिक स्वीकार की गई है क्योंकि ये कविताऍं समसामयिक चुनौतियों से मुठभेड करती है। कवयित्री का चिंतन समसामयिक विषयों पर केंद्रित है। मनुष्य इतना स्वार्थी हो गया है कि छोटे–छोटे लाभ प्राप्त करने के लिए प्रकृति और पर्यावरण के साथ खिलवाड कर रहा है। वह यह नहीं जानता कि प्रकृति का यह पलटवार मानव समाज केक लिए घातक और मारक होगा। इस भयावह स्थिति पर उनके उद्‌गार हैं – **'कितना अच्छा है...यह बीसवीं सदी है/सब पेड. कटने लगे है/प्राणतत्व की अब ऐसी तैसी/विडंबना सदी है यह बीसवीं सदी।'[23]**

स्पष्ट है कि अनामिका मानव जीवन को बृहत्तर परिप्रेक्ष्य में देखती है। उनकी कविताऍं उनके प्रगतिशील विचारों की परिचायक है। नारी मन की पीड़ा उनकी कविता के केंद्र में है। अनामिका की कविताऍं सिद्ध करती है कि वे समकालीन हिंदी कविता की एक प्रमुख हस्ताक्षर है। उनके पास विषयों की कमी नही है। वे स्वयं चिंतक है और कविता पर भी सोचते–लिखते हुए अनामिका स्पष्ट घोषणा करती है कि – **'सुनो हमें अनहद की तरह'।**

संपर्क सूत्र –

1. शितल स्पर्श धूप को – अनामिका – पृ. 2
2. शितल स्पर्श धूप को – अनामिका – पृ. 50
3. शितल स्पर्श धूप को – अनामिका – पृ. 5
4. समय के शहर में – अनामिका – पृ. 40
5. समय के शहर में – अनामिका – पृ. 62
6. समय के शहर में – अनामिका – पृ. 62
7. समय के शहर में – अनामिका – पृ. 648
8. समय के शहर में – अनामिका – पृ. 80
9. समय के शहर में – अनामिका – पृ. 80
10. समय के शहर में – अनामिका – पृ. 126
11. अनुष्टुप – अनामिका – पृ. 60
12. दूबधान – अनामिका – पृ. 110
13. अनुष्टुप – अनामिका – पृ. 86
14. अनुष्टुप – अनामिका – पृ. 97
15. खुरदरी हथेलिया – अनामिका – पृ. 22
16. अनामिका एक मूल्यांकन – संपादक – अभिषेक कश्यप – पृ. 51
17. खुरदुरी हथेलिया – अनामिका – पृ. 32
18. अनामिका एक मूल्यांकन – संपादक, अभिषेक कश्यप – पृ. 33
19. खुरदुरी हथेलिया – अनामिका – पृ. 140
20. अनभै सांचा – जून, मार्च – 2006 – पृ. 107 – 108
21. दूब–धान – अनामिका – पृ. 158
22. कवि ने कहा – अनामिका – पृ. 44
23. दूब–धान – अनामिका – पृ. 179